Classical Dances of India

BY DR GAURAV GARG

DOWNLOAD STUDY IQ APP

GET IT ON Google Play

उभारदार मूर्तिकला, नृत्य कला, लक्ष्मण मंदिर, मध्य प्रदेश

कथक नृत्य, लघु चित्रकला किशनगढ़, राजस्थान

मूर्तिकला नर्तक, देलवाड़ा मंदिर, राजस्थान

शिव नृत्य, लघु चित्र, चम्बा, हिमाचल प्रदेश

नर्तक, सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओडिशा

प्रागैतिहासिक गुफा चित्रकारी, भीमबेटका, मध्य प्रदेश

- Folk dance: A traditional dance of a particular group of people or place is folk dance. Folk dance is performed according to the folk music. It belongs to a particular community, place or caste

- Classical dance: The dance describing the characters of God,Goddess and religious scriptures is called classical dance.

- लोक नृत्य: किसी विशेष लोगों के समूह या किसी विशेष स्थान का पारंपरिक नृत्य लोक नृत्य है। यह एक विशेष समुदाय, स्थान या जाति से संबंधित है

- शास्त्रीय नृत्य: भगवान, देवी-देवता और धार्मिक शास्त्रों के पात्रों का वर्णन करने वाले नृत्य को शास्त्रीय नृत्य कहा जाता है।

- Excavations, inscriptions, chronicles, genealogies of kings and artists, literary sources, sculpture and painting of different periods provide extensive evidence on dance in India.
- Contemporary classical dance forms have evolved out of the musical play or sangeet-nataka performed from the 12th century to the 19th century.
- The first formal mention of dance is found in Bharata Muni's famous work Natya Shastra.

- खुदाई, शिलालेख, क्रोनिकल्स, राजाओं और कलाकारों की वंशावली, साहित्यिक स्रोत, विभिन्न अवधियों की मूर्तिकला और पेंटिंग भारत में नृत्य पर व्यापक प्रमाण प्रदान करते हैं।
- समकालीन शास्त्रीय नृत्य के रूप 12 वीं शताब्दी से 19 वीं शताब्दी तक किए गए संगीत नाटक से विकसित हुए हैं।
- नृत्य का पहला औपचारिक उल्लेख भरत मुनि के प्रसिद्ध कार्य नाट्य शास्त्र में मिलता है।

✓Dance is a form of art, where the body is used as a medium of communication

✓The dance heritage of India is at least 5000 years old.

✓Dance is of divine origin – It was ritual form of worship in temples

✓Nataraja, the dancing Lord Shiva, is the supreme manifestation of Indian dance

नृत्य कला का एक रूप है, जहां शरीर का उपयोग संचार के माध्यम के रूप में किया जाता है

भारत की नृत्य विरासत कम से कम 5000 साल पुरानी है।

भगवान शिव का नृत्य रूप नटराज, भारतीय नृत्य की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है

As per Natya Shastra, there are two basic aspects of Indian classical dance.

1. Lasya – It denotes grace, bhava, rasa and abhinaya. It is symbolic to the feminine features of dance as an art form.
2. Tandava – This is symbolic to the male aspects of dance and has more emphasis on rhythm and movement.

नाट्य शास्त्र के अनुसार, भारतीय शास्त्रीय नृत्य के दो बुनियादी पहलू हैं।

1. लस्य - यह अनुग्रह, भाव, रस और अभिनय को दर्शाता है। यह एक कला के रूप में नृत्य की स्त्री विशेषताओं का प्रतीक है।
2. तांडव - यह नृत्य के पुरुष पहलुओं का प्रतीक है और इसमें लय और गति पर अधिक जोर दिया गया है।

9 rasas or emotions that are expressed through the dance

श्रृंगार Shringar – love
हास्य Hasya – Humor
करुणा Karuna – compassion
रौद्र Raudra – Anger
भयंकर Bhayankar – horror

वीर Veer – heroic
अद्भुत Adbhut – Wonder
वीभत्स Vibhatsa – disgust
शांत Shaant – calm

These moods and expressions are emoted through the use of Mudras – a combination of hand gestures and body postures.

108 fundamental mudras

इन मनोदशाओं और अभिव्यक्तियों को हाथ के इशारों और शरीर की मुद्राओं के माध्यम से दर्शाया जाता है

108 मौलिक मुद्राएँ

As per Abhinaya Darpan, Nandikeshwara's famous treatise on dance, an act has been broken into three basic elements:

1. Nritta – basic dance steps, performed rhythmically. No expression or mood conveyed.

2. Nritya – basic movement + gestures and poses using hands and fingers (hastamudras) and facial expressions (abhinaya).
   Refers to the sentiment and the emotions evoked through dance.

3. Natya - dramatic representations and refers to the story that is elaborated through the dance recital.

अंग सञ्चालन द्वारा भावों की अभिव्यक्ति अभिनय कहलाता है । अभिनय के तीन भेद है -नाट्य,नृत्त, नृत्य

नाट्य- किसी पात्र का अनुकरण या किसी कथा के अनुसार अभिनय करना नाट्य कहलाता है । इसे रूपक भी कहा जाता है क्यूंकि इसे हम आँखों से देख सकते है । जब किसी ऐतिहासिक पात्र है अनुकरण नर्तक करता है ,उसके चाल ढाल ,बोलने का ढंग, वेश भूषा आदि तो हम उसे नाट्य कहते हैं ।

नृत्त - अभिनय के भेद में जिसमे भाव दर्शाने का स्थान न हो पर सिर्फ ताल लय बद्ध अंग सञ्चालन हो उसे नृत्त कहते हैं । इसमें अंग सञ्चालन किसी अर्थपूर्ण भाव प्रदर्शन के लिए नहीं परन्तु एकमात्र सौंदर्य के लिए किया जाता हैं । इसी कारन इसे परिशुद्ध नृत्य भी कहते हैं । कहा जाता है की यह नृत्य सबसे प्राचीन है । शिव भगवन का तांडव नृत्य भी नृत्त है । यह नृत्त अत्यंत शुभ मन जाता है इसलिए सभी शुभ अवसरों में इसे किया जाता है, ।

नृत्य :- अभिनय का तीसरा भेद नृत्य है ।नाट्य और नृत्त के समन्वय से नृत्य की उत्पत्ति होती है । तीनों भेदों में से नृत्य की कला सबसे आकर्षक और कठिन होता है । नृत्य में लय प्रधान होने के कारण यह संगीत का हिस्सा भी है । भारत के प्रत्येक नृत्य शैली में नाट्य, नृत्त, नृत्य ,इन तीनों को अलग अलग प्रस्तुत किया जाता है।

Indian Classical dance

8 classical dances

- ✓Governed by rules of Natyashastra
- ✓Guru-shishya tradition
- ✓Recognized by Sangeet-Natak Akademi

8 शास्त्रीय नृत्य

- ✓नाट्यशास्त्र के नियमों द्वारा शासित
- ✓गुरु-शिष्य परंपरा
- ✓संगीत-नाटक अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त

8 classical dances of India

1. Bharatnatyam
2. Kuchipudi
3. Kathakali
4. Mohiniattam
5. Odissi
6. Manipuri
7. Kathak
8. Sattariya

1. भरतनाट्यम्
2. कुचिपुड़ी
3. कथकली
4. मोहिनीअट्टम
5. ओड़िसी
6. मणिपुरी
7. कथक
8. सत्रिया

© Copyright 2020 Study IQ

Bharatnatyam (Tamil Nadu)

- Oldest among all classical dance forms, Bharatnatyam derives its name from Bharata Muni.
- The Abhinaya Darpana by Nandikesvara is one of the main sources of study Bharatnatyam.
- Ekaharya, where one dancer takes on many roles in a single performance.
- The efforts of E. Krishna Iyer, a prominent freedom fighter, revived this dance form.
- Rukmini Devi Arundale gave the dance global recognition.
- Theme - Religious and devotional

भरतनाट्यम (तमिलनाडु)

- सभी शास्त्रीय नृत्यों में सबसे पुराना
- भरतनाट्यम का नाम भरत मुनि से लिया गया है।
- नंदिकेश्वरा द्वारा रचित अभिनय दर्पण भरतनाट्यम अध्ययन का मुख्य स्रोत
- एकाहार, जहाँ एक नर्तक एकल प्रदर्शन में कई भूमिकाएँ निभाता है।
- एक स्वतंत्रता सेनानी ई कृष्ण अय्यर के प्रयासों ने इस नृत्य कला को पुनर्जीवित किया।
- रुक्मिणी देवी ने नृत्य को वैश्विक पहचान दी।
- थीम - धार्मिक और भक्तिपूर्ण

- In this dance form, equal emphasis is given on both the Tandava and Lasya aspects of dance, with major emphasis on 'mudras'.
- The dance involves transitional movements of leg, hip and arm. Expressive eye movements and hand gestures are used to convey emotions
- Bharatnatyam is often referred to as the 'fire dance', as it is the manifestation of the element of fire in the human body.
- Famous proponents: Yamini Krishnamurthy, Lakshmi Viswanathan, Padma Subramaniam, Mrinalini Sarabhai, Mallika Sarabhai, etc.

- इस नृत्य में, नृत्य के तांडव और लस्य दोनों पहलुओं पर बराबर जोर दिया जाता है, जिसमें 'मुद्रा' पर प्रमुख जोर दिया जाता है।
- नृत्य में पैर, कूल्हे और हाथ की मूवमेंट को शामिल किया जाता है। भावनाओं को व्यक्त करने के लिए आँखों और हाथ के इशारों का उपयोग किया जाता है
- भरतनाट्यम को अक्सर 'अग्नि नृत्य' कहा जाता है , क्योंकि यह मानव शरीर के अग्नि तत्व की अभिव्यक्ति है
- प्रसिद्ध प्रस्तावक: यामिनी कृष्णमूर्ति, लक्ष्मी विश्वनाथन, पद्म सुब्रमण्यम, मृणालिनी साराभाई, मल्लिका साराभाई आदि।

- Costume are made of silk saris with gold embroidery and has a lot of pleats
- Necklace, Bangles and head ornaments are used as jewelry
- Bells mounted on woven pads are worn on the feet
- Knees are bent
- Generally performance completed with chanting of shlokas
- Bharatnatyam poses are depicted on the gopurams of the Chidambaram temple (Tamil Nadu).

- वेशभूषा सोने की कढ़ाई के साथ रेशम की साड़ियों से बनी होती है और इसमें बहुत सारे प्लेट होते हैं
- हार, चूड़ी और सिर के गहने उपयोग किए जाते हैं
- बुने हुए पैड पर लगे बेल्स पैरों में पहने जाते हैं
- इस नृत्य में घुटने मुड़े हुए होते हैं
- आमतौर पर श्लोकों के जाप के साथ प्रदर्शन पूरा किया जाता है
- चिदंबरम मंदिर (तमिलनाडु) के गोपुरम मंदिर में भरतनाट्यम की मुद्राओं को दर्शाया गया है।

Kathak (North India)

- It was primarily a temple or village performance wherein the dancers narrated stories from ancient scriptures, it traces its origins from the Ras Leela of Brajbhoomi
- Name is derived from Katha (story) and kathakaar (who tells stories).
- Kathak began evolving into a distinct mode of dance in the fifteenth and sixteenth centuries with the spread of the bhakti movement.
- Under the Mughal emperors and their nobles, Kathak was performed in the court, where it acquired its present features and developed into a form of dance with a distinctive style.
- Under the patronage of Wajid Ali Shah, the last Nawab of Awadh, it grew into a major art form.

कथक (उत्तर भारत)

- कथक मुख्य रूप से एक मंदिर या गाँव का प्रदर्शन था जिसमें नर्तक प्राचीन शास्त्रों से कहानियाँ सुनाते थे,
- कथक की उत्पत्ति ब्रजभूमि की रास लीला से हुई
- इसका नाम कथा (कहानी) और कथाकार (जो कहानियाँ बताता है) से लिया गया है।
- कथक का प्रसार पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में भक्ति आंदोलन के समय में हुआ
- मुगल सम्राटों ने इसे एक दरबारी नृत्य बना दिया जहां कथक ने अपनी वर्तमान विशेषताओं का अधिग्रहण किया और एक विशिष्ट शैली के साथ नए रूप में विकसित हुआ।
- अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण में यह एक प्रमुख कला के रूप में विकसित हुआ।

- The classical style of Kathak was revived by Lady Leela Sokhey in the 20th century.

- Jugalbandi is the main attraction of kathak recital which shows a competitive play between the dancer and the tabla player.

- कथक की शास्त्रीय शैली को 20 वीं शताब्दी में एक महिला लीला सोखी द्वारा पुनर्जीवित किया गया।

- जुगलबंदी कथक गायन का मुख्य आकर्षण है जो नर्तक और तबला वादक के बीच एक समन्वय और सामंजस्य दिखाता है।

- Theme- Radha krishna
- Dance progresses from slow to fast pieces.
- Has Footwork & spins and includes abhinaya-expression
- Performed on Hindustani music provided by Tabla, Sitar, Santoor
- Female- lehenga choli or chudidaar kameez
- Male- bare chest and dhoti or kurta churidar

- थीम- राधा कृष्ण
- नृत्य धीमी से तेज गति से आगे बढ़ता है।
- तबला, सितार, संतूर द्वारा प्रदत्त हिंदुस्तानी संगीत पर प्रदर्शन किया जाता है
- महिला- लेहेंगा चोली या चूड़ीदार कमीज़
- पुरुष- नंगी छाती और धोती या कुर्ता

An important feature of Kathak is the development of different gharanas as it is based on Hindustani style of music:

- ✓Lucknow: Nawab Wajid Ali Khan
- ✓Jaipur: Initiated by Bhanuji
- ✓Raigarh: Raja Chakradhar Singh
- ✓Banaras: It developed under Janaki prasad

कथक की एक महत्वपूर्ण विशेषता विभिन्न घरानों का विकास है क्योंकि यह संगीत की हिंदुस्तानी शैली पर आधारित है:

- ✓लखनऊ: नवाब वाजिद अली खान
- ✓जयपुर: भानुजी द्वारा शुरू की गई
- ✓रायगढ़: राजा चक्रधर सिंह
- ✓बनारस: यह जानकी प्रसाद जी द्वारा विकसित हुआ

Famous proponents:

- Birju Maharaj
- Lacchu Maharaj
- Sitara Devi
- Shovana Narayan

- मुख्य नर्तक

- बिरजू महाराज
- लच्छू महाराज
- सितारा देवी
- शोवना नारायण

- Usually a solo performance, the dancer often pauses to recite verses followed by their execution through movement.
- The focus is more on footwork; the movements are skillfully controlled and performed straight legged by dancers wearing ankle-bells.
- आमतौर पर कथक एकल प्रदर्शन होता है,
- नर्तक अक्सर छंद का पाठ करने के लिए रुकता है और उसके बाद नृत्य करके उस छंद को प्रदर्शित करता है
- फुटवर्क पर ध्यान अधिक रहता है; टखने पर घंटियाँ पहने हुए पैरों को कुशलता से नियंत्रित किया जाता है

Kuchipudi – Andhra Pradesh

- Kuchipudi was originally performed by group of actors going from village to village, known as Kusselavas.
- Kuchipudi derives its name from the Andhra village of Kusselavapuri or Kuchelapuram village in the Krishna district
- In 17th century, Siddhendra Yogi formalized and systematized the tradition.
- With the advent of Vaishnavism, the dance form became a monopoly of the male Brahmins.
- Stories of Bhagavat purana became a central theme of the recitals.
- It is performed as dance drama i.e. performance in groups and also as solo items.

कुचिपुड़ी - आंध्र प्रदेश

- कुचिपुड़ी मूल रूप से कुसलवस के नाम से जाने जाने वाले अभिनेताओं के समूह द्वारा गांव-गांव जाकर किया जाता था।
- कुचिपुड़ी आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के कुशलावपुरी या कुचेलपुरम गांव से अपना नाम प्राप्त करता है
- 17 वीं शताब्दी में, सिद्धेंद्र योगी ने परंपरा को औपचारिक और व्यवस्थित किया।
- वैष्णववाद के आगमन के साथ, यह नृत्य पुरुष ब्राह्मणों का एकाधिकार बन गया।
- भागवत पुराण की कहानियाँ इस नृत्य का एक केंद्रीय विषय बन गईं।
- यह नृत्य नाटक के रूप में किया जाता है यानी समूहों में प्रदर्शन और एकल में भी।

- Balasaraswati and Ragini Devi revived this dance form.
- There is a predominance of Shringaara ras.
- Solo elements in Kuchipudi are:

➢ Manduk shabdam – Tells the story of a frog.

➢ Tarangam – The dancer performs with his/ her feet on the edges of a brass plate and balancing a pot of water on the head or a set of diyas.

➢ Jala Chitra Nrityam – In this item, the dancer draws pictures on the floor with his or her toes while dancing.

- Famous proponents: Radha Reddy and Raja Reddy, Yamini Krishnamurthy, Indrani Rehman etc.

- बालसरस्वती और रागिनी देवी ने इस नृत्य कला को पुनर्जीवित किया।
- श्रृंगार रस की प्रधानता है।

- कुचिपुड़ी में तत्व हैं:
- मांडुक शबदम् - एक मेंढक की कहानी कहता है।
- तरंगम - नर्तक पीतल की प्लेट के किनारों पर अपने पैरों के साथ प्रदर्शन करता है और सिर पर पानी का एक बर्तन या दीयों का एक सेट संतुलित करता है।
- जल चित्र नृत्यम - इसमें, नर्तक नृत्य करते समय अपने पैर की उंगलियों के साथ फर्श पर तस्वीरें बनाता है।
- प्रसिद्ध प्रस्तावक: राधा रेड्डी और राजा रेड्डी, यामिनी कृष्णमूर्ति, इंद्राणी रहमान आदि।

Kathakali – Kerala

- Ramanattam, Koodiyattam and Krishnattam – separate dance forms - evolved and became the source of Kathakali.
- Under the patronage of feudal lords
- Narrating episodes from Ramayana and Mahabharata
- With the breakdown of the feudal set up, Kathakali started to decline as an art form.

कथकली – केरल

- रामनट्टम , कूडियाट्टम और कृष्णट्टम - अलग अलग नृत्य रूप विकसित हुए और कथकली के स्रोत बन गए।

- रामायण और महाभारत के एपिसोड का वर्णन

- It was revived in the 1930s by the famous Malayali poet V. N. Menon under the patronage of Mukunda Raja.
- Kathakali is essentially an all-male troupe performance.
- There is minimal use of prop in the Kathakali recital.
- The dancers enact the roles (kings, gods, demons etc.) of the stories with particular make-up and costume, the vocalists narrate the legend and the percussionists play the musical instruments.

- मुकुंद राजा के संरक्षण में प्रसिद्ध मलयाली कवि वी एन मेनन द्वारा 1930 के दशक में इसे पुनर्जीवित किया गया था।
- कथकली अनिवार्य रूप से एक सर्व-पुरुष मंडली प्रदर्शन है।
- कथकली गायन में प्रॉप का कम से कम उपयोग होता है।
- नर्तक विशेष रूप से मेकअप और वेशभूषा के साथ कहानियों की भूमिकाओं (राजाओं, देवताओं, राक्षसों आदि) का निर्माण करते हैं, गायक कथा सुनाते हैं और संगीतकार वाद्य यंत्र बजाते हैं।

Elaborate facial make up along with a head gear is used.

- **Green color** – richness and decency
- **Red color –** dominance
- **Black color** – for evil
- **Yellow color** – for women

Elaborate facial make up along with a head gear is used.

- **Green color** – richness and decency
- **Red color –** dominance
- **Black color** – for evil
- **Yellow color** – for women

- The language used for Kathakali songs is Manipravalam, i.e., a mixture of Malayalam and Sanskrit.

- Kathakali is remarkable in the representation of the rasas through movements of eye and eye brows.

- Kathakali symbolizes the element of sky.

- Famous proponents: Guru Kunchu Kurup, Gopi Nath, Kottakal Sivaraman, Rita Ganguly etc.

- कथकली गीतों के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा मणिप्रवलम है, यानी, मलयालम और संस्कृत का मिश्रण।
- कथकली आंख और भौंह के मूवमेंट के माध्यम से रसों का उल्लेख किया जाता है।
- कथकली आकाश तत्व का प्रतीक है।
- प्रसिद्ध प्रस्तावक: गुरु कुंचु कुर्प, गोपी नाथ, कोट्टाकल शिवरामन, रीता गांगुली आदि।

Mohiniattam - Kerala

- Mohiniattam or the Dance of an Enchantress ('Mohini' was Incarnation of Lord Vishnu and 'attam' means dance), is essentially a solo dance performance by women.
- It was further developed by Vadivelu in 19th century and gained prominence under the rulers of Travancore in the present state of Kerala.
- After it had fallen to obscurity, the famous Malayali poet V. N. Menon revived it along with Kalyani Amma.

Mohiniattam - Kerala

- मोहिनीअट्टम ('मोहिनी' भगवान विष्णु का अवतार और अट्टम 'का अर्थ है नृत्य), महिलाओं द्वारा अनिवार्य रूप से एकल नृत्य प्रदर्शन है।
- इसे 19 वीं शताब्दी में वडिवेलु द्वारा विकसित किया गया था और इसने वर्तमान केरल राज्य में त्रावणकोर के शासकों के अधीन प्रमुखता प्राप्त की।
- प्रसिद्ध मलयाली कवि वी एन मेनन ने कल्याणी अम्मा के साथ इसे पुनर्जीवित किया।

- Generally narrates the story of the feminine dance of Vishnu.
- The Lasya aspect (beauty, grace) of dance is dominant in a Mohiniattam recital.
- The element of Air is symbolised through a Mohiniattam performance.

- Famous proponents: Sunanda Nair, Kalamandalam Kshemavathy, Madhuri Amma, Jayaprabha Menon

- विष्णु के स्त्री नृत्य की कहानी का वर्णन
- मोहिनीअट्टम में नृत्य का लस्य पहलू (सौंदर्य, अनुग्रह) प्रमुख है।
- वायु के तत्व को दर्शाया गया है।

- प्रसिद्ध प्रस्तावक: सुनंदा नायर, कलामंडलम क्षेमवती, माधुरी अम्मा, जयप्रभा मेनन

Odissi - Odisha

- The caves of Udayagiri-Khandagiri provide some of the earliest examples of Odissi dance.
-
- The dance form derives its name from the 'Odra nritya' mentioned in Natya Shastra.
- It was primarily practised by the 'maharis' and patronised by the Jain king Kharvela.
- Odissi gained international acclaim due to the efforts of Charles Fabri and Indrani Rehman.

Indrani Rahman

ओडिसी - ओडिशा

- उदयगिरि-खंडगिरि की गुफाएं ओडिसी नृत्य के कुछ शुरुआती उदाहरण प्रदान करती हैं।
- इस नृत्य रूप का नाम नाट्य शास्त्र में उल्लेखित 'ओड्रा नृत्य' से लिया गया है।
- यह मुख्य रूप से माहारी ’द्वारा प्रचलित था और जैन राजा खारवेल द्वारा संरचित था।
- चार्ल्स फैबरी और इंद्राणी रहमान के प्रयासों के कारण ओडिसी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा मिली।

- With the advent of Vaishnavism in the region, the Mahari system became defunct.
- Instead, young boys were recruited and dressed as females to continue the art form. They came to be known as 'Gotipuas'.

- Famous proponents: Minati Mishra, Guru Pankaj Charan Das, Guru Kelu Charan Mohapatra, Sonal Mansingh, Sharon Lowen (USA), Myrla Barvie (Argentina).

- इस क्षेत्र में वैष्णववाद के आगमन के साथ, माहारी प्रणाली समाप्त हो गई।

- इसके बजाय, युवा लड़कों को भर्ती किया गया और कला के रूप को जारी रखने के लिए महिलाओं के रूप में उन्हें ही कपड़े पहनाये जाते थे, उन्हें 'गोटिपुआ' के नाम से जाना जाने लगा।

- प्रसिद्ध प्रस्तावक: मिनाती मिश्रा, गुरु पंकज चरण दास, गुरु केलू चरण महापात्र, सोनल मानसिंह

- The major subjects of performance are related to incarnations of Lord Vishnu and verses of Jayadeva's Gita Govinda.

- Termed as 'mobile sculpture' it incorporates two major postures - Tribhanga (the body is deflected at the neck, torso and the knees) and Chowk (a position imitating a square).

- प्रदर्शन के प्रमुख विषय भगवान विष्णु के अवतार और जयदेव के गीता गोविंदा के छंदों से संबंधित हैं।

- इसमें दो प्रमुख आसन शामिल हैं - त्रिभंगा (शरीर को गर्दन, धड़ और घुटनों को मोड़ा जाता है) और चौक (एक वर्ग की नकल करने वाली स्थिति)।

- The dancers create intricate geometrical shapes and patterns with her body.
- The dance form symbolises the element of water.
- Odissi dance is accompanied by Hindustani classical music.

- नर्तक उसके शरीर के साथ जटिल ज्यामितीय आकार और पैटर्न बनाते हैं।
- नृत्य रूप पानी के तत्व का प्रतीक है।
- ओडिसी नृत्य हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ किया जाता है।

Sattriya - Assam

- Sattriya dance in modern-form was introduced by the Vaishnava saint Shankaradeva in the 15th century A.D in Assam.

- The art form derives its name from the Vaishnava monasteries known as 'Sattras', where it was primarily practised.

सत्रिया - असम

- आधुनिक रूप में सत्रिया नृत्य का परिचय वैष्णव संत शंकरदेव ने 15 वीं शताब्दी में असम में किया था।

- कला का नाम वैष्णव मठों से लिया गया है, जिन्हें "सत्र" के नाम से जाना जाता है, जहां यह मुख्य रूप से प्रचलित था।

- It finds mention in the ancient text 'Natya Shastra' of sage Bharat Muni. It is inspired from Bhakti Movement.
- The dance is generally performed in group by male monks known as 'Bhokots'.
- In the modern times, Sattriya dance has evolved into two separate streams – the Gayan-Bhayanar Nach and the Kharmanar Nach.

- इसका उल्लेख ऋषि मुनि के प्राचीन ग्रंथ 'नाट्य शास्त्र' में मिलता है। यह भक्ति आंदोलन से प्रेरित है।

- यह नृत्य आम तौर पर समूह में भिक्षुओं द्वारा किया जाता है, जिन्हें 'भोकोट्स' कहा जाता है।

- आधुनिक समय में, सतरिया नृत्य दो अलग-अलग धाराओं में विकसित हुआ है - गायन-भयानार नाच और खमनार नाच।

Manipuri - Manipur

- Manipuri dance form finds its mythological origin to the celestial dance of Shiva and Parvati in the valleys of Manipur.
- The dance gained prominence with the advent of Vaishnavism in 15th century.
- Then, Krishna became the central theme of this dance form. It is performed generally by females.
- Rabindranth Tagore brought back the dance form into limelight when he introduced it in Santiniketan.

मणिपुरी - मणिपुर

- मणिपुरी नृत्य मणिपुर की घाटियों में शिव और पार्वती के पौराणिक कथाओं पर आधारित है
- 15 वीं शताब्दी में वैष्णववाद के आगमन के साथ नृत्य को प्रमुखता मिली।
- फिर, कृष्ण इस नृत्य के केंद्रीय विषय बन गए।

- यह आम तौर पर महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- रबींद्रनाथ टैगोर ने शांतिनिकेतन में इसे पेश करते हुए नृत्य कला को फिर से सुर्खियों में ला दिया।

Manipuri - Manipur

Dress-

- ✓ Female- dress called patloi and lehenga called kumin. Transparent odni is worn on the head and covers the face.
- ✓Male- usually saffron dress depicting Lord Krishna
- Dancers do not wear ankle bells in this dance form

Manipuri - Manipur

महिला - पोशाक जिसे पटलोई और लेहेंगा को कुमिन कहा जाता है।

पारदर्शी ओडनी सिर पर पहनी जाती है और चेहरे को ढका जाता है।

नर - आमतौर पर भगवान कृष्ण को दर्शाती भगवा पोशाक पहनते हैं

नर्तक इस नृत्य रूप में टखने की घंटी नहीं पहनते हैं

Manipuri - Manipur

- Lai Haraoba is the earliest form of dance
- The principal performers are the maibas and maibis (priests and priestesses) who re-enact the theme of the creation of the world.

Manipuri - Manipur

- लाई हरोबा नृत्य का सबसे प्राचीन रूप है
- मुख्य कलाकार माईबा और माबी (पुजारी और पुजारन) हैं जो दुनिया के निर्माण के विषय को फिर से प्रदर्शित करते हैं।

- Manipuri dance is unique in its emphasis on devotion
- The faces are covered with a thin veil and facial expression is of lesser importance, hand gestures and gentle movement of feet are important.
- Naga Bandha mudra, in which the body is connected through curves in the shape of '8' is an important posture in Manipuri dance form.

- Famous proponents:

Jhaveri sisters-Nayana, Suverna, Ranjana and Darshana

Guru Bipin Singh

- मणिपुरी नृत्य भक्ति पर जोर देने में अद्वितीय है।
- चेहरे एक पतली घूंघट के साथ कवर किए गए हैं और चेहरे की अभिव्यक्ति कम महत्व की है,
- हाथ के इशारे और पैरों की गति महत्वपूर्ण है।
- नागा बांध मुद्रा, जिसमें शरीर को "8" के आकार में किया जाता है, मणिपुरी नृत्य में एक महत्वपूर्ण मुद्रा है।

- प्रसिद्ध प्रस्तावक:

झवेरी बहनें-नयना, सुवर्णा, रंजना और दर्शना

गुरु बिपिन सिंह

Classical Dances of India

BY DR GAURAV GARG

DOWNLOAD STUDY IQ APP

GET IT ON Google Play